Faizane Imam Shaafei (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 237
Weekly Booklet : 237

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

फ़ैज़ाने इमाम शाफ़ेई

सफ़हात 20

- इज़्ज़तो शराफ़त की इन्तिहा 02
- कपड़े के टुकड़ों पर इल्म की बातें 04
- इमाम शाफ़ेई की दाढ़ी मुबारक 11
- बन्दा मोटा क्यूं होता है ? 13

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **फ़ैज़ाने इमाम शाफ़ेई** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه
पहली बार : रजबुल मुरज्जब **1443** हि., मार्च **2022** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**फ़ैज़ाने इमाम शाफ़ेई** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला : **"फ़ैज़ाने इमाम शाफ़ेई** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه" पढ़ या सुन ले, उसे इ़ल्मे दीन की ला ज़वाल दौलत से मालामाल फ़रमा कर बे ह़िसाब बख़्श दे ।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **:** मैं हर मुसल्मान के लिये पसन्द करता हूं कि वोह हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़े । (طبقات الکبریٰ للشعرانی، 1/74)

बैठते उठते जागते सोते हो इलाही मेरा शिआ़र दुरूद
दिल में जल्वे बसे हुए तेरे लब से जारी हो बार बार दुरूद

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

हुस्ने सुलूक की बेहतरीन मिसाल

मन्क़ूल है कि एक बार इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने किसी दरज़ी से क़मीस (Kameez [Long Shirt]) सिलवाई । दरज़ी आप के मक़ामो मर्तबे से ना वाक़िफ़ था । उस ने मज़ाक़ करते हुए दाईं आस्तीन (Right sleeve) इतनी तंग कर दी कि उस में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का हाथ ब मुश्किल दाख़िल होता और बाईं (Left) इतनी खुली कर दी कि उस में सर भी दाख़िल हो सकता था । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में जब क़मीस पेश की गई तो आप

ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक तुझे जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए ! तंग आस्तीन वुज़ू में ऊपर चढ़ाने के लिये बेहतर है और खुली आस्तीन किताब रखने के लिये मुनासिब है। इसी दौरान ख़लीफ़ए वक़्त का क़ासिद (Messenger) दस हज़ार दिरहम ले कर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में हाज़िर हुवा। आप ने उस से इर्शाद फ़रमाया : इस दरज़ी को कपड़ों की सिलाई दे दो। जब दरज़ी ने क़ासिद से आप के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उस ने बताया : येह बुज़ुर्ग इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه हैं। येह सुनते ही वोह आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पीछे हो लिया और क़दम मुबारक चूमते हुए मा'ज़िरत की, फिर आप की ख़िदमते बा बरकत में ही रहने लगा और आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के हल्क़ए अह़बाब में शामिल हो गया। (الروض الفائق، ص 208)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने हमारे बुज़ुर्गों का हुस्ने अख़्लाक़ देखा ? अगर्चे मुआ़मला ग़ुस्सा दिलाने वाला था मगर इन्तिक़ाम न लेने का ह़सीन जज़्बा रखने वाले इ़ल्मो ह़िल्म के इमाम, ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की शान पे क़ुरबान ! आप ने न सिर्फ़ दरज़ी को मुआ़फ़ फ़रमा दिया बल्कि उसे उजरत से भी नवाज़ दिया।

इ़ज़्ज़तो शराफ़त की इन्तिहा

करोड़ों शाफ़िइ़य्यों के इमाम, दूसरी सदी हिजरी के अ़ज़ीम तबए़ ताबेई बुज़ुर्ग, ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का मुबारक नाम मुह़म्मद, कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह और वालिदे मोह़तरम का नाम इदरीस था। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का एक लक़ब नासिरुल ह़दीस भी है। आप रातों को जाग कर

इबादत करने वाले, दुन्या की लज़्ज़तों से दूर रहने वाले, नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ फ़रमाने वाले थे। आप का शजरए नसब **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जा मिलता है। इमाम अबू नुऐम अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं : "इ़ज़्ज़तो शराफ़त की इन्तिहा येह है कि एक मुसल्मान का ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ तमाम मख़्लूक़ात से अफ़्ज़ल हस्ती ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जा मिलता हो।" (حلیۃ الاولیاء، 9/75، رقم:13163، تاریخ بغداد، 2/66، رقم:454)

वालिदए मोह़तरमा का ख़्वाब

ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की विलादत से पहले आप की अम्मीजान ने ख़्वाब देखा कि मुश्तरी सय्यारा (Jupiter) मेरे बदन से जुदा हो कर मिस्र में गिरा फिर वहां से हर शह्र में उस की रोशनी फैल गई है। ख़्वाब की ता'बीर बताने वालों ने बयान किया कि आप से एक ऐसा आ़लिम पैदा होगा जिस से ख़ास त़ौर पर मिस्र के लोग फ़ैज़ पाएंगे और फिर उन से दूसरे शह्र वाले। (تاریخ بغداد، 2/57، رقم:454)

विलादते बा सआ़दत

करोड़ों ह़नफ़िय्यों के अ़ज़ीम इमाम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ऐन वफ़ात शरीफ़ के दिन ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه 150 हिजरी को फ़िलिस्त़ीन में ग़ज़्ज़ा या अ़स्क़लान के मक़ाम में पैदा हुए। आप की उ़म्र मुबारक जब दो साल हुई तो आप के वालिदे मोह़तरम दुन्या से तशरीफ़ ले गए फिर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की अम्मीजान आप को ले कर मक्कए पाक ह़ाज़िर हो गईं। मक्कए पाक में ही आप ने परवरिश पाई और इ़ल्मे दीन ह़ासिल किया।

(حلیۃ الاولیاء، 9/76، رقم:13166-13167، سیر اعلام النبلاء، 8/380، رقم:1539)

अश्आ़र की तलाश छोड़ कर त़लबे इल्मे दीन

ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं छोटी उ़म्र में अश्आ़र तलाश कर कर के लिखता रहता था, एक दिन मैं मक्कए पाक में या मक्के की एक सम्त में जा रहा था कि मैं ने किसी पुकारने वाले को सुना : "ऐ मुह़म्मद बिन इदरीस ! तुम इ़ल्म ह़ासिल करो।" मैं ने मुड़ कर देखा तो कोई नज़र न आया मगर फिर मैं ने इ़ल्म ह़ासिल करना शुरूअ़ कर दिया और मैं फटे पुराने कपड़ों के टुकड़ों पर इ़ल्म की बातें लिख कर मटके (Clay pot) में डाल दिया करता था यहां तक कि वोह भर गया। मैं यतीम था और मेरी वालिदए मोह़तरमा के पास ता'लीमी अख़्राजात के लिये कुछ भी नहीं था। (حلیۃ الاولیاء، 9/83، رقم:13191)

शौक़े इल्मे दीन

इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का बयान है : मां के पास मुअ़ल्लिम (Teacher) को देने के लिये कुछ न था, अलबत्ता मुअ़ल्लिम इस बात पर राज़ी हो गए कि उन के जाने के बा'द मैं (मद्रसे की) निगरानी किया करूं। मैं ने सात साल की उ़म्र में क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ कर लिया तो मस्जिद जाने लगा और उ़लमाए किराम के पास बैठ कर ह़दीस और (दीनी) मसाइल याद करना शुरूअ़ कर दिये। मक्कए पाक में हमारा घर वादिये ख़ैफ़ में था। मैं कोई चमक्दार हड्डी देखता तो उस पर ह़दीस और मस्अला लिख लेता था, जब वोह हड्डी भर जाती तो मैं उसे एक पुराने घड़े में डाल देता। **अल्लाह** पाक ने आप पर इ़ल्म के दरवाज़े खोल दिये यहां तक कि ह़ज़रते मुस्लिम बिन ख़ालिद ज़न्जी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने आप को फ़तवा की तरग़ीब देते हुए फ़रमाया : अबू अ़ब्दुल्लाह ! तुम फ़तवा दिया करो, बख़ुदा तुम्हारे फ़तवा देने का वक़्त आ चुका है। ह़ालां कि उस वक़्त इमाम शाफ़ेई

15 साल के थे। (حلیۃ الاولیاء، 9/82، رقم:13186 ـ کتاب الثقات لابن حبان، 5/406، رقم:2997 ـ سیر اعلام النبلاء، 8/380، رقم:1539)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

इमाम शाफ़ेई की फ़ज़ीलत ब ज़बाने आख़िरी नबी (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क़ुरैश को गाली न दो बेशक उन का आ़लिम ज़मीन को इ़ल्म से भर देगा।

इमाम अबू बक्र हुसैन बिन अह़मद बैहक़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमारे उ़लमाए किराम की एक जमाअ़त का कहना है कि यहां जिस आ़लिम का ज़िक्र है इस से मुराद ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हैं और येही बात इमाम अह़मद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मरवी है। (معرفۃ السنن والآثار، 1/207)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

40 साल से दुआ़

इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : 6 अफ़राद ऐसे हैं जिन के लिये मैं सह़री में दुआ़ करता हूं, उन में से एक इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हैं। (تاریخ بغداد، 2/64، رقم:454) ह़ज़रते यह़या बिन सईद क़त्तान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं (40 साल से नमाज़ के बा'द) ख़ास तौ़र पर इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के लिये दुआ़ करता हूं (طبقات الشافعیۃ الکبریٰ، 1/249) और ह़ज़रते अबू बक्र बिन ख़ल्लाद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं हर नमाज़ के बा'द इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के लिये दुआ़ करता हूं।" (سیر اعلام النبلاء، 8/383، رقم:1539) अय्यूब बिन सुवैद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं गुमान नहीं करता कि मैं इमाम शाफ़ेई के बा'द इन जैसा कोई और देखूं।

(حلیۃ الاولیاء، 9/101، رقم:13219) मामूनुर्रशीद कहते हैं : ''मैं ने इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ का हर त़रह़ से इम्तिह़ान लिया मगर मैं ने उन्हें हर इम्तिह़ान में काम्याब ही पाया।'' (سیر اعلام النبلاء، 8/382، رقم:1539)

आ़लिमे मदीना इमामे मालिक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िरी

ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ अपने चचा के साथ मक्कए पाक से यमन तशरीफ़ ले गए। जब वापस तशरीफ़ लाए तो पहले पहल ह़ज़रते मुस्लिम बिन ख़ालिद ज़न्जी और ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِمَا से पढ़ते रहे फिर आप ने इमामे मालिक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की ख़िदमत में जाने से पहले (उन की ह़दीस की किताब) ''मुअत्ता़ इमाम मालिक'' दस साल की उ़म्र में ह़िफ़्ज़ कर ली, आप फ़रमाते हैं कि जब मेरी उ़म्र 12 साल हुई तो मैं इमामे मालिक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा कि उन्हें ''मुअत्ता'' सुनाऊं, इमामे मालिक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने छोटा समझ कर फ़रमाया : किसी को तलाश करो जो तुम्हारे लिये पढ़े। मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! अगर आप को मेरा पढ़ना अच्छा लगे तो मुझ ही से सुन लीजिये वरना मैं किसी पढ़ने वाले को ले आऊंगा। फ़रमाया : पढ़ो। मैं आप के सामने पढ़ता रहा ह़त्ता कि ''किताबुस्सियर'' तक पहुंच गया। आप ने मुझ से फ़रमाया : बेटा ! इसे संभाल लो और अब इ़ल्मे फ़िक़्ह ह़ासिल करो और उसी में लगे रहो।

(حلیۃ الاولیاء، 9/78، 79، 83 ملتقطا)

मुज्तहिद किसे कहते हैं ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस्लाम में 100 या इस से कुछ ज़ियादा मुज्तहिदीन हुए हैं, मुज्तहिद वोह है जिस में इस क़दर इ़ल्मी लियाक़त और क़ाबिलिय्यत हो कि क़ुरआनी इशारात व रुमूज़ को समझ सके और कलाम के मक़्सद को पहचान सके और उस से मसाइल निकाल

सके, नासिख़ व मन्सूख़ का पूरा इल्म रखता हो। इल्मे सर्फ़ व नहू, बलाग़त वग़ैरा में उस को पूरी महारत हासिल हो, अह़काम की तमाम आयतों और ह़दीसों पर उस की नज़र हो। (आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब, स. 44)

ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मुज्तहिदे मुत्लक़ और फ़िक़्हे शाफ़ेई के बानी हैं, आप के मुक़ल्लिदों को शवाफ़ेअ़ कहते हैं। दुन्या में अह़नाफ़ के बा'द सब से ज़ियादा ता'दाद शवाफ़ेअ़ की है। **अल्लाह** करीम ने इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को बहुत मक़्बूलिय्यत अ़ता फ़रमाई। सह़ीहुल अ़क़ीदा ह़नफ़ी हो या शाफ़ेई, मालिकी हो या ह़म्बली सब आपस में भाई भाई हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! इन का आपस में कोई तअ़स्सुब (Racism) नहीं और तअ़स्सुब हो भी कैसे सकता है क्यूं कि जब चारों अइम्मए मुज्तहिदीन में तअ़स्सुब न था तो उन के मानने वाले कैसे तअ़स्सुब करेंगे लिहाज़ा दुन्या भर में जहां कहीं भी शाफ़ेई, मालिकी या ह़म्बली ख़ुश अ़क़ीदा हों वोह हमारे इस्लामी भाई हैं। **अल्लाह** पाक हमें इन चारों बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم के फ़ैज़ान से नवाज़े।

मालिकी हो ह़म्बली हो ह़नफ़ी हो या शाफ़ेई मत तअ़स्सुब रखना और करना न इन से दुश्मनी

(वसाइले बख़्शिश, स. 699)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

इमाम मालिक का इमाम शाफ़ेई को तोह़फ़ा

इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने मदीनए पाक में इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के दरवाज़े पर ख़ुरासान या मिस्र के घोड़े बंधे देखे जो आप को बत़ौरे हदिय्या (Gift) पेश किये गए थे, इस क़दर आ'ला घोड़े मैं ने कभी न देखे थे। चुनान्चे मैं ने अ़र्ज़ की : "येह घोड़े कितने उ़म्दा हैं!" फ़रमाया : "मैं येह सब आप को तोह़फ़े में देता हूं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "एक

घोड़ा अपने लिये तो रख लीजिये।" फ़रमाया : "मुझे **अल्लाह** पाक से ह़या आती है कि उस मुबारक ज़मीन को अपने घोड़े के क़दमों तले रौंदूं जिस में उस के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मौजूद हैं या'नी आप का रौज़ए अन्वर है।" (احیاء العلوم، 1/48۔ الروض الفائق، ص217)

हां हां रहे मदीना है ग़ाफ़िल ज़रा तो जाग ओ पाउं रखने वाले येह जा चश्मो सर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 217)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मदीने में नंगे पाउं रहना आ़शिक़ों का त़रीक़ा है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आ़शिक़ों के अन्दाज़ निराले होते हैं, मह़बूब से निस्बत रखने वाली हर चीज़ से मह़ब्बत होती है। इमामे मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जैसे बुज़ुर्ग जिन्हें आ़लिमे मदीना कहा जाता था, मदीनए पाक में नंगे पाउं रहते थे। एक तो वोह बा बरकत ज़माना था और एक आज का दौर है कि बा'ज़ नादान लोग मदीनए पाक में नंगे पाउं रहने के मुआ़मले में शैत़ानी वस्वसों का शिकार होते हैं, याद रखिये ! हर वोह बात जो शरीअ़त व दीन से न टकराए वोह जाइज़ है और जाइज़ काम पर मुसल्मान को त़ा'नो तश्नीअ़ का निशाना बनाना सख़्त गुनाह का काम है। हमारी आंखें अपने बुज़ुर्गों पर बन्द हैं اِنْ شَآءَ اللهُ الْكَرِيْم हमें किसी भी शैत़ानी वस्वसे डालने वाले की बातों में नहीं आना क्यूं कि

हम इ़श्क़ के बन्दे हैं क्यूं बात बढ़ाई है

"सख़ी" के 3 ह़ुरूफ़ की निस्बत से सख़ावते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के तीन वाक़िआ़त

(1) एक हज़ार सोने के सिक्के बांट दिये

एक मरतबा ख़लीफ़ा हारून रशीद के ह़ुक्म से इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

को एक हज़ार दीनार दिये गए तो आप ने क़बूल फ़रमा लिये। ख़लीफ़ा ने अपने ख़ादिम सिराज से फ़रमाया : इन के पीछे जाओ और देखो येह क्या करते हैं। ख़ादिम पीछे चल पड़ा उस ने देखा कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه घर वापस आते हुए मुट्ठी भर भर कर वोह दीनार (Dinar) लुटाते रहे ह़त्ता कि घर के दरवाज़े पर पहुंच गए तो सिर्फ़ एक मुट्ठी दीनार बाक़ी थे, वोह भी आप ने अपने ख़ादिम को देते हुए फ़रमाया : इन से फ़ाएदा उठाओ। सिराज ने आंखों देखा ह़ाल हारून रशीद को बताया तो उस ने कहा : इसी वज्ह से इन का दिल बे नियाज़ और पीठ मज़बूत़ है। (حلیۃ الاولیاء، 9/139، رقم:13410)

(2) पचास हज़ार दीनार

एक मरतबा ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास हरसमा आए और ख़लीफ़ा हारून रशीद का सलाम पहुंचा कर कहा : ख़लीफ़ा ने आप को 50 हज़ार दीनार देने का कहा है। चुनान्चे वोह माल आप तक पहुंचा दिया गया, आप ने ह़ज्जाम (Barber) को बुलाया और उस ने आप के बाल तराशे तो आप ने उसे 50 दीनार दे दिये, फिर कपड़े के टुकड़ों में दीनारों की पोटलियां (Small bags) बनाईं और जितने क़रशी वहां मौजूद थे और जो मक्कए मुकर्रमा में थे उन में तक़्सीम फ़रमा दिये ह़त्ता कि जब आप घर पहुंचे तो आप के पास 100 दीनार से भी कम रह गए थे। (حلیۃ الاولیاء، 9/140، رقم:13413)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सख़ावत बड़ी उ़म्दा आ़दत है, **अल्लाह** करीम हमें भी अपने मुसल्मान भाइयों पर अच्छी निय्यत के साथ माल ख़र्च करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। रिज़ाए इलाही के लिये राहे ख़ुदा में ख़र्च किये हुए माल पर आख़िरत में अज्रो सवाब मिलने के साथ साथ सख़ीदिल शख़्स दुन्या में भी इ़ज़्ज़त पाता है और लोगों के दिलों में उस की मह़ब्बत बढ़ती है जब कि तंग हाथ रखने वाला कन्जूस आख़िरत

के साथ साथ दुन्या में भी लोगों की नज़रों में ज़लील होता है। अलबत्ता बिला ज़रूरते शर्ई किसी से सुवाल नहीं करना चाहिये क्यूं कि सुवाल अगर्चे कम क़ीमत ही हो दूसरे की नज़र में अपनी इज़्ज़त कम कर देता है। इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه न सिर्फ़ सख़ी थे बल्कि **अल्लाह** पाक पर तवक्कुल करने वाले बा मुरव्वत व हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर थे। आप की मुबारक अंगूठी पर येह लिखा हुवा था : كَفٰى بِاللهِ ثِقَةٌ لِمُحَمَّدِ بْنِ اِدْرِيْس या'नी मुहम्मद बिन इदरीस के लिये **अल्लाह** पाक पर ए'तिमाद करना काफ़ी है। (طبقات للشعرانی، 1/74)

(3) शागिर्दों के साथ हुस्ने सुलूक

अबू सौर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने सख़ी दिल होने के सबब बहुत कम ही अपने पास कुछ बचाते थे। (حلیۃ الاولیاء، 9/141، رقم:13418) इमाम मुज़नी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं ने इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से ज़ियादा सख़ी किसी को नहीं देखा, ईद की रात एक मस्अले पर गुफ़्तगू करते हुए मैं आप के साथ मस्जिद से निकला, हम आप के दरवाज़े पर पहुंचे तो एक ग़ुलाम आया और आप से कहा : मेरे आक़ा ने आप को सलाम कहा है और येह पैसों की थेली आप के लिये दी है। आप ने वोह थेली ले कर अपनी आस्तीन में रख ली, इतने में आप के एक शागिर्द ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! अभी अभी मेरे हां बच्चे की विलादत हुई है और मेरे पास कुछ नहीं है। आप ने वोह थेली उस के हवाले कर दी और ख़ुद ख़ाली हाथ घर चले गए। (حلیۃ الاولیاء، 9/140، رقم:13415) हज़रते रबीअ़ बिन सुलैमान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कहते हैं : मैं ने शादी की तो इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने मुझ से पूछा : मह्र कितना रखा है ? मैं ने अ़र्ज़ की : 30 दीनार। फ़रमाया : अदा कितना किया है ? अ़र्ज़

की : छे दीनार। तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने घर गए और मेरी त़रफ़ एक थेली भिजवाई जिस में 24 दीनार थे। (حلیۃ الاولیاء، 9/140، رقم:13414)

दो कामों में दिलचस्पी

ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे दो चीज़ों में बड़ी दिलचस्पी थी : (1) तीर अन्दाज़ी और (2) इ़ल्म ह़ासिल करना। मैं ने तीर अन्दाज़ी में इस क़दर महारत ह़ासिल की, कि दस तीर चलाता तो दस के दस निशाने पर लगते। रावी कहते हैं कि इ़ल्म के ह़वाले से आप ख़ामोश रहे तो मैं ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक की क़सम ! इ़ल्म में तो आप अपनी तीर अन्दाज़ी से भी बढ़ कर हैं। (حلیۃ الاولیاء، 9/86، رقم:13196)

इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की दाढ़ी मुबारक

इमाम मुज़नी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से ज़ियादा ह़सीनो जमील नहीं देखा। आप के रुख़्सार (Cheek) मुबारक हलके फुलके थे और आप की दाढ़ी मुबारक एक मुठ्ठी थी। जब दाढ़ी शरीफ़ पर हाथ रखते तो एक मुश्त (One fist) से ज़ियादा न होती थी, दाढ़ी मुबारक पर मेहंदी लगाते और ख़ुश्बू बहुत पसन्द फ़रमाते थे।

(سیر اعلام النبلاء، 8/379، 415، رقم:1539)

मस्जिदे ह़राम में दीनी मसाइल बयान करने का दीनी ह़ल्क़ा

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! मक्कए पाक मस्जिदे ह़राम में फ़तवे का ह़ल्क़ा सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا के पास था, इन के बा'द अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते अ़त़ा बिन अबी रबाह़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه येह ह़ल्क़ा लगाते थे, फिर ह़ज़रते अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन जुरैज رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़तवा देने लगे, इन के बा'द येह ह़ल्क़ा ह़ज़रते मुस्लिम बिन ख़ालिद ज़न्जी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के सिपुर्द (या'नी ह़वाले) हुवा, फिर

इस मन्सब पर ह़ज़रते सईद बिन सालिम क़द्दाह़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के बा'द ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه तशरीफ़ फ़रमा हुए जब कि आप उस वक़्त नौ जवान थे। (حلیۃ الاولیاء، 9/100، رقم:13216)

आ़फ़ियत का सुवाल कीजिये

एक मरतबा ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه शदीद बीमार हो गए और येह दुआ़ करते : "ऐ **अल्लाह** पाक ! अगर इस बीमारी में तू राज़ी है तो इस में मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमा दे।" तो शह्र के अत़राफ़ से ह़ज़रते इदरीस बिन यह्या मआ़फ़िरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उन्हें एक ख़त़ भेजा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! हमारे लिये बेहतर येह है कि हम **अल्लाह** पाक से आ़फ़ियत का सुवाल किया करें।" इस के बा'द ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने क़ौल से रुजूअ़ करते हुए अ़र्ज़ किया : "मैं **अल्लाह** पाक से मग़्फ़िरत त़लब करता हूं और उस की बारगाह में तौबा करता हूं।" फिर आप यूं दुआ़ किया करते : اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ خَيْرَتِيْ فِيْمَا اُحِبُّ या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! मेरी भलाई उन उमूर में रख दे जिन्हें मैं पसन्द करता हूं। (قوت القلوب، 1/270 ملتقطا)

उस्ताज़ भी शागिर्द की त़रफ़ भेजते

इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के नवासे अह़मद बिन मुह़म्मद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अपने वालिदे मोह़तरम और चचाजान से सुना कि जब ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से तफ़्सीर और ख़्वाब की ता'बीर के मुतअ़ल्लिक़ कोई बात पूछी जाती तो आप इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाते : येह बात इन से पूछो। (حلیۃ الاولیاء، 9/98، رقم:13207)

इमाम शाफ़ेई, इमाम मुह़म्मद की ख़िदमत में

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़िक़्हे ह़नफ़ी के अ़ज़ीम इमाम, इमामे आ'ज़म के शागिर्दे रशीद इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन शैबानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

इमाम शाफ़ेई के असातिज़ए किराम में से हैं। जब इमाम शाफ़ेई इराक़ तशरीफ़ लाए तो इमामे आ'ज़म के क़ाबिल तरीन शागिर्द ह़ज़रते इमाम अबू यूसुफ़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का इन्तिक़ाल शरीफ़ हो चुका था। (تاریخ بغداد، 2/55، رقم:454، سیر اعلام النبلاء، 8/397، رقم:1539) इमाम मुह़म्मद رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की बेवा वालिदए मोह़तरमा से निकाह़ कर लिया था और इमाम शाफ़ेई ही को अपना तमाम माल और कुतुब ख़ाना (Library) दे दिया था। इमाम शाफ़ेई رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के फ़क़ीह व मुज्तहिद होने का सब से बड़ा और ह़क़ीक़ी सबब येही है ख़ुद इमाम शाफ़ेई फ़रमाते हैं: जो शख़्स इल्मे फ़िक़्ह ह़ासिल करना चाहे उसे ह़ज़रते इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा और इन के तलामिज़ा व अस्ह़ाब (رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہِم) का दामन थाम लेना चाहिये क्यूं कि ह़क़ाइक़ उन पर मुन्कशिफ़ कर (या'नी खोल) दिये गए हैं और मआ़नी, मफ़ाहीम तक रसाई उन के लिये सह्ल (या'नी आसान) बना दी गई है फिर फ़रमाया: ख़ुदा की क़सम! मैं हरगिज़ फ़क़ीह (या'नी आ़लिम) न होता अगर मैं मुह़म्मद बिन ह़सन शैबानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का दामन न थाम लेता और उन की किताबें मेरे पास न होतीं। (बहारे शरीअ़त, 3/1040, ह़िस्सा: 19 ब तग़य्युर) ह़ज़रते रबीअ़ बिन सुलैमान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ कहते हैं: मैं ने ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ को फ़रमाते सुना कि मैं ने इमाम मुह़म्मद رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ से बुख़्ती ऊंट के बोझ बराबर इल्म ह़ासिल किया और वोह सब मैं ने बज़ाते ख़ुद सुना है। (حلیۃ الاولیاء، 9/86، رقم:13198) एक मौक़अ़ पर इमाम शाफ़ेई رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने इर्शाद फ़रमाया: फ़िक़्ह में मुझ पर सब से बढ़ कर जिस शख़्स का एह़सान (Favour) है वोह इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन शैबा رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ हैं। (تاریخ بغداد، 2/173، رقم:593)

बन्दा मोटा क्यूं होता है?

फ़रमाने इमाम शाफ़ेई رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ: इमाम मुह़म्मद رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के

सिवा कोई भी मोटा शख़्स काम्याब नहीं हुवा। पूछा गया : वोह क्यूं ? फ़रमाया : इस लिये कि अ़क़्ल मन्द आदमी में दो में से एक आ़दत ज़रूर होती है या तो वोह अपनी आख़िरत के लिये ग़मगीन रहता है या फिर अपनी दुन्या के लिये और ग़म के साथ चरबी कभी नहीं चढ़ती, लिहाज़ा जब बन्दा दोनों ग़मों से ख़ाली है तो फिर वोह जानवरों की सफ़ में चला गया और चरबी चढ़ने लगी। (حلیۃ الاولیاء، 9/155، رقم:13495)

बहुत खाने पीने से परहेज़ करना कि बिस्यार ख़ोरी में नुक़्सां बड़ा है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

इमाम शाफ़ेई की इमामे आ'ज़म से अ़क़ीदतो महब्बत

इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का बारगाहे इमामे आ'ज़म, अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه में अदबो एह़तिराम का येह आ़लम था कि आप फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रत इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से बरकत ह़ासिल करता हूं और आप की क़ब्र पर ह़ाज़िरी देता हूं और जब मुझे कोई ज़रूरत पेश आती है तो मैं दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल अदा करता हूं और उन की क़ब्र के क़रीब आ कर अपनी ज़रूरत के लिये **अल्लाह** पाक से दुआ़ करता हूं तो मेरी ज़रूरत जल्द पूरी हो जाती है। और एक मुस्तनद रिवायत येह है कि ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने नमाज़े फ़ज्र इमामे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ के नज़्दीक अदा की तो उस में क़ुनूत नहीं किया। जब कि शवाफ़ेअ़ के यहां क़ुनूत नमाज़े फ़ज्र में पढ़ी जाती है किसी ने आप से सुवाल किया कि हुज़ूर येह क्या किया ? आप ने फ़ज्र में क़ुनूत नहीं किया। आप ने जवाब में फ़रमाया : येह साह़िबे क़ब्र का अदबो एह़तिराम है।

(बहारे शरीअ़त, 3/1046, ह़िस्सा : 19)

है नाम नो'मान इब्ने साबित, अबू ह़नीफ़ा है उन की कुन्यत

पुकारता है येह कह के आ़लम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मज़ाराते औलिया की बरकतें

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! इस वाक़िए़ से येह भी पता चला कि औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के मज़ारात शरीफ़ पर ह़ाज़िरी देना **अल्लाह** के नेक बन्दों का पुराना त़रीक़ा चला आ रहा है। जो लोग बिला वज्ह औलियाए किराम के मज़ारात पर ह़ाज़िरी देने से मन्अ़ करते हैं वोह सख़्त ग़लत़ फ़हमी में मुब्तला हैं, उन्हें चाहिये कि शैत़ानी वस्वसों से बचते हुए ख़ुद भी मज़ाराते मुबारका पर ह़ाज़िरी दें और आ़शिक़ाने रसूल को भी ह़ाज़िरी से न रोकें। अलबत्ता अगर मज़ार शरीफ़ के अत़राफ़ में कोई ग़ैर शर्ई मुआ़मला हो या बे पर्दगी वग़ैरा हो तो उस को दिल में ज़रूर बुरा जानिये मगर इस वज्ह से अपने आप को ह़ाज़िरी से मह़रूम कर लेना सख़्त नादानी है। नाक पर मख्खी बैठे तो मख्खी को उड़ाना चाहिये, न कि बन्दा अपनी नाक ही काट ले।

इस्लाम के पहले ख़लीफ़ा

ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه की ख़िलाफ़त पर लोगों ने इत्तिफ़ाक़ किया, फिर आप ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْه को ख़लीफ़ा बनाया जब कि उन्हों ने छे अफ़राद की शूरा बनाई कि अपने में से किसी एक को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर लें तो शूरा ने ख़िलाफ़त ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللهُ عَنْه को सिपुर्द कर दी। वज्ह येह थी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द लोगों में बड़ी बेचैनी थी और उन्हों ने आस्मान के नीचे ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه से बेहतर किसी को

न पाया तो आप ही को अपना ख़लीफ़ा बना लिया । (حلیۃ الاولیاء،9/122، رقم:13324) ह़ज़रते रबीअ़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कहते हैं : मैं ने इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को येह फ़रमाते हुए सुना कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द लोगों में सब से अफ़्ज़ल ह़ज़रते अबू बक्र फिर ह़ज़रते उ़मर फिर ह़ज़रते उ़स्मान और फिर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْهُم हैं । (حلیۃ الاولیاء،9/122، رقم:13324)

सायए मुस्त़फ़ा मायए इस्त़फ़ा इ़ज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

या 'नी उस اَفْضَلُ الْخَلْقِ بَعْدَ الرُّسُل ثَانِیَ اثْنَیْنِ *हिजरत पे लाखों सलाम*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

उम्मते मह़बूब के लिये दुआ़एं

ह़ज़रते ह़सन कराबीसी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं ने इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के साथ कई रातें गुज़ारी हैं । आप तक़रीबन एक तिहाई रात नमाज़ पढ़ते थे और मैं ने उन्हें 50 से ज़ियादा आयात पढ़ते नहीं देखा, अगर ज़ियादा पढ़ते तो 100 पढ़ लेते और किसी भी आयते रह़मत पर पहुंचते तो बारगाहे इलाही में अपने लिये और तमाम मुसल्मानों के लिये रह़मत की दुआ़ मांगते और जब भी कोई अ़ज़ाब (के तज़्किरे) वाली आयत पढ़ते तो उस से पनाह मांगते फिर अपने और तमाम मुसल्मानों के लिये इस से नजात मांगते थे । (معرفۃ السنن والآثار،1/196)

ख़ौफ़े ख़ुदा से बेहोश हो गए

इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के सामने एक मरतबा बड़ी प्यारी आवाज़ में इन आयाते मुबारका की तिलावत की गई :

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿۳۶﴾

(پ29، المرسلٰت:35،36)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह दिन है कि वोह बोल न सकेंगे । और न उन्हें इजाज़त मिले कि उ़ज़्र करें ।

तो आप का रंग तब्दील हो गया, रोंगटे खड़े हो गए और जिस्म शरीफ़ के जोड़ कपकपाने लगे और आप बेहोश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। जब त़बीअ़त कुछ बेहतर हुई तो बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** पाक! मैं झूटों के ठिकाने और ग़ाफ़िल लोगों के मुंह फेरने से तेरी पनाह चाहता हूं। **या अल्लाह** पाक! तेरी पहचान रखने वालों के दिल तेरे लिये झुक गए और तेरी मुलाक़ात का शौक़ रखने वालों की गरदनें तेरी हैबत के सामने झुक गईं। ऐ मेरे मालिको मौला! मुझ पर अपना फ़ज़्लो करम अ़त़ा फ़रमा और मुझे अपने पर्दए बख़्शिश में छुपा ले और अपने लुत़्फ़ो करम से मेरी कोताहियां मुआ़फ़ फ़रमा दे। (احیاء العلوم، 1/45)

या ख़ुदा! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा बाग़े फ़िरदौस मर्हमत फ़रमा
तू गुनाहों को कर मुआ़फ़ अल्लाह! मेरी मक़्बूल मा'ज़िरत फ़रमा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

इबादात व नेक आ़दात

ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने रात को तीन ह़िस्सों में तक़्सीम कर रखा था : एक तिहाई इ़ल्म के लिये, एक तिहाई इबादत के लिये और एक तिहाई आराम के लिये। (حلیۃ الاولیاء، 9/143، رقم:13431) आप रमज़ानुल मुबारक में 60 क़ुरआने करीम ख़त्म फ़रमाया करते थे और सब नमाज़ में ख़त्म करते। (حلیۃ الاولیاء، 9/142، رقم:13426) आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं ने **अल्लाह** पाक की कभी सच्ची या झूटी क़सम नहीं खाई और मैं ने कभी भी झूट नहीं बोला। (حلیۃ الاولیاء، 9/136، رقم:13391)

ऐ आ़शिक़ाने इमाम शाफ़ेई ! काश! हमें भी रोज़ाना कुछ न कुछ क़ुरआने करीम पढ़ने, सुनने की सआ़दत नसीब हो जाए, काश! हम भी ख़ौफ़े ख़ुदा में रोएं, गुनाहों से तौबा करें। **अल्लाह** पाक की बारगाह में सज्दे में सर झुकाएं। पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त पाबन्दी से अदा करें। काश! इमाम

शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सदक़े हमारी ज़बान से भी कभी झूट न निकले, मज़ाक़ में भी झूट नहीं बोलना चाहिये । बा'ज़ ताजिर गाहक फंसाने के लिये **अल्लाह** पाक के नाम की झूटी क़सम तक उठाने में लिहाज़ नहीं करते । झूटी क़सम खाना कबीरा (या'नी बड़ा) गुनाह और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। झूटी क़सम माल बिक्वा देती और बरकत ख़त्म कर देती है। बात बात पर क़सम खाने वाला अपना ए'तिमाद खो देता है फिर लोग उस पर ए'तिबार नहीं करते अगर्चे वोह बात में सच्चा ही क्यूं न हो। 72 नेक आ'माल के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم दीनो दुन्या की बे शुमार भलाइयां हाथ आएंगी नीज़ आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतें सीखने सिखाने के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये रोज़ी में बरकत के साथ साथ नेकियों में बरकत का ज़ेहन बनेगा और गुनाहों से बचने में मदद मिलेगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़ेहरिस

हुस्ने सुलूक की बेहतरीन मिसाल.....1
इज़्ज़तो शराफ़त की इन्तिहा.....2
वालिदए मोहतरमा का ख़्वाब.....3
विलादते बा सआदत.....3
अश्आर की तलाश छोड़ कर तलबे इल्मे दीन.4
शौक़े इल्मे दीन.....4
इमाम शाफ़ेई की फ़ज़ीलत ब ज़बाने आख़िरी नबी..5
40 साल से दुआ.....5
आलिमे मदीना इमामे मालिक की
ख़िदमत में हाज़िरी.....6
मुज्तहिद किसे कहते हैं ?.....6
इमाम मालिक का इमाम शाफ़ेई को तोहफ़ा...7
मदीने में नंगे पाउं रहना आशिक़ों का तरीक़ा..8
सख़ावते इमाम शाफ़ेई के 3 वाक़िआत....8
दो कामों में दिलचस्पी.....11
इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की दाढ़ी मुबारक..11
मस्जिदे हराम में दीनी मसाइल का हल्क़ा.11
उस्ताज़ भी शागिर्द की तरफ़ भेजते.....12
इमाम शाफ़ेई, इमाम मुहम्मद की ख़िदमत में.12
बन्दा मोटा क्यूं होता है ?.....13
इमाम शाफ़ेई की इमामे आ'ज़म से
अक़ीदतो महब्बत.....14
इस्लाम के पहले ख़लीफ़ा.....15
उम्मते महबूब के लिये दुआएं.....16
ख़ौफ़े ख़ुदा से बेहोश हो गए.....16
इबादात व नेक आदात.....17